एक मसीही पत्रिका

सांत्वना

चरनी में प्रगट हुआ प्रेम

बाइबल अध्ययन: थिस्सलुनीकियों की पत्री

न्यायियों की पुस्तक का संक्षिप्त परिचय

असली क्रिसमस

प्रभु के दास डॉ. ग्राहम स्टेंस की जीवनी

बुद्धिमानी के साथ जीवन जीना

प्रभु की दासी श्रीमती थंकम्मा कोशी (1928 - 2023) के लिए प्रशंसा के शब्द ...

नवम्बर-दिसम्बर 2023

केवल निजी वितरण हेतु

संपादकीय

सम्पादक मंडल

मुख्य संपादक
अतुल्य पी. मसीह

सह-संपादक
एबी वर्गीस
जैमोन के सैम

सम्पादकीय समिति
शमूएल बी. थॉमस
सैम मैथ्यू
जेम्स पॉल
अमरजीत
बेन्नी चार्लिल

प्रसार प्रभारी
एबी जोसफ

सलाहकार समिति
टी. जे. जोसफ
सेसन अब्राहम
जोसफ वर्गीस

डिज़ाइन और लेआउट
संजय रेड्डी
प्रिंस बी. तोप्पिल

समस्त प्रिय पाठकों को मसीही स्नेहाभिवादन एवं ख्रीष्ट-जयंती बहुत बहुत मुबारक हो!

क्रिसमस सीजन में इस दुनिया के प्राय: सभी मसीही परिवार उन्हें बधाई देने आनेवाले अपने मित्रों के लिए अपने-अपने घरों को सजाया करते हैं। कुछ घरों में तो क्रिसमस झांकियां भी बनाई जाती हैं। विभिन्न देशों, संस्कृतियों और सभ्यताओं के लोग इस बात का विशेष ध्यान रखते हैं कि उन झांकियों में रखे गए सभी लोग, स्वर्गदूत, और जानवरों की आंखें "बालक यीशु" की ओर लगी हुई हैं। ऐसी झांकियों को देखकर एक विचार हमारे मनों को परमेश्वर के प्रति और भी अधिक धन्यवाद और आभार से भर देता है कि प्रभु यीशु का जन्म इस पृथ्वी की सम्पूर्ण मानवजाति के लिए एक शुभ-संदेश है। यह सभी देशों और समस्त जातियों के लोगों के लिए बड़े आनंद का एक कारण है।

सचमुच प्रियो, प्रभु यीशु मसीह का जन्म सारी मानवजाति के लिए परमेश्वर की मनोदशा की सच्चाई को प्रगट करता है। इस बात का उल्लेख प्रेरित यूहन्ना ने प्रभु यीशु और इस्राएलियों के एक गुरू नीकुदेमुस के मध्य वार्तालाप में किया है: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परंतु अनंत जीवन पाए" (यूहन्ना 3:16)।

परमेश्वर का अवर्णनीय दान प्रभु यीशु हर एक व्यक्ति के लिए शुभ-संदेश है। अब इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि इस पृथ्वी पर आप कौन सी जगह को अपना घर मानते हैं, प्रभु यीशु का जन्म आपके लिए परमेश्वर के प्रेम, उनकी शांति और उनके परिवार के सदस्य बनने के अधिकार को प्राप्त करने का प्रस्ताव है। प्रभु यीशु ही शांति के वह राजकुमार हैं जो हमें हमारे पापों से छुटकारा देते हैं (यशायाह 9:6)। क्रूस पर अपने स्वयं के बलिदान के आधार पर सभी लोगों के समक्ष वह उनके द्वारा पापों की क्षमा प्राप्त करने और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लेने हेतु आमंत्रित करते हैं। अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता प्रभु के रूप में उन्हें स्वीकार करनेवाले सभी लोग - हर एक कुल और भाषा और जन-समुदाय और जाति से, जो प्रभु यीशु में नया जीवन प्राप्त करते हैं, एक दिन हमेशा हमेशा के लिए परमेश्वर की महिमा का गुणगान करेंगे (प्र. वा. 5:9)।

आइए हम परमेश्वर पिता को उनके पुत्र रूपी दान के द्वारा हमें उद्धार प्रदान करने के लिए हृदय से धन्यवाद की भेंटें अर्पित करें।

प्रभु में आपका भाई
अतुल्य मसीह

इस अंक में

चरनी में प्रगट हुआ प्रेम 4
डॉ. कोशी मैथ्यू, मुंबई

बाइबल अध्ययन: थिस्सलुनीकियों की पत्री 5
इव्हें. पी. बी. शमूएल, राजस्थान

न्यायियों की पुस्तक का संक्षिप्त परिचय 6
साभार: इव्हें. राज कुमार, फिरोजपुर, पंजाब

असली क्रिसमस 7
बहन तब्बसुम रॉय पेस, भिवाड़ी, राजस्थान

प्रभु के दास डॉ. ग्राहम स्टेंस की जीवनी 8
साभार - इव्हें. क्रूपानंद, केरल

बुद्धिमानी के साथ जीवन जीना 9
बहन ज्योति साहू, राजनांदगांव (छ.ग.)

प्रभु की दासी श्रीमती थंकम्मा कोशी (1928 - 2023) **के लिए प्रशंसा के शब्द ...** 10
डॉ. कोशी मैथ्यू, मुंबई

चरनी में प्रगट हुआ प्रेम

डॉ. कोशी मैथ्यू, मुंबई

मसीह का जन्म इस सृष्टि का सबसे महानतम आश्चर्यकर्म है। बैतलहम की चरनी में प्रगट होने वाला परमेश्वर का प्रेम सर्वश्रेष्ठ आश्चर्यकर्म है! पलिस्तीन की लंबाई और चौड़ाई में परमेश्वर ने मानव देह में होकर विचरण किया, यह अद्भुत है। पलिस्तीन की धूल भरी गलियों में परमेश्वर का प्रिय भलाई करता हुआ घूमता रहा।

प्रेम की परिभाषा

प्रेम सबसे अधिक गलत समझे जाने वाले शब्दों में से एक है। इसलिए बाइबल के अनुसार प्रेम को परिभाषित करना आवश्यक है। यूनानी भाषा में प्रेम को व्यक्त करने के लिए विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है। पवित्रशास्त्र में आम तौर से प्रयोग किए गए शब्द हैं अगापे और फिलियो। यूनानी साहित्य में सामान्यतः प्रेम के लिए चार शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नया नियम में प्रेम के लिए सबसे अधिक प्रयुक्त शब्द है अगापे। यह क्रिया अथवा संज्ञा के रूप में 259 बार आया है। जबकि फिलियो और फिलोस का प्रयोग केवल 54 बार हुआ है। अन्य शब्द, जैसे कि 'इरोस' और 'स्टेरगो' नया नियम में प्रयोग ही नहीं किए गए हैं।

1. अगापे प्रेम

यह प्रेम का सर्वोच्च तथा सबसे निःस्वार्थ स्वरूप है (1 कुरिन्थियों 13)। यह वह प्रेम है जिसे आप सभी लोगों के प्रति व्यक्त कर सकते हैं, वे चाहे परिवार के सदस्य हों अथवा अजनबी हों। अगापे को लातीनी भाषा में चैरितास अनुवाद किया गया, जिससे फिर अंग्रेज़ी का शब्द "चैरिटी" आया। यह स्वाभाविक नहीं है, यह हमारे स्वभाव के बिलकुल विपरीत है। यह उन से भी प्रेम करना है जो प्रेम किए जाने के अयोग्य हैं, कुरूप हैं, जिनसे प्रेम हो नहीं सकता है। यह प्रेम देता सब कुछ है, किन्तु प्रत्युत्तर में कुछ भी नहीं माँगता है।

वह यूनानी शब्द जो परमेश्वर के प्रेम को व्यक्त करता है, उस प्रेम को बताता है जो हमें लोगों के प्रति रखना है, वह अगापे है। अगापे परमेश्वर का स्वभाव है, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:7-12, 16)। आज लोग प्रेम के विषय एक भावना के रूप में विचार करने के आदी हैं, परन्तु यह अगापे प्रेम के लिए निश्चित नहीं है। अगापे प्रेम उसके कारण है जो वह करके दिखाता है, न कि किसी अनुभूति के कारण।

परमेश्वर ने ऐसा "प्रेम" (अगापे) किया कि उसने अपना पुत्र दे दिया। वह कोई भली अनुभूति नहीं थी जिसने परमेश्वर से यह करवाया, परन्तु वह प्रेम था जिसके अंतर्गत उसने यह किया। मसीह ने इतना प्रेम (अगापे) किया कि उसने अपना प्राण बलिदान कर दिया। वह मरना नहीं चाहता था, परन्तु उसने प्रेम किया था, इसलिए उसने वह किया जो परमेश्वर की इच्छा थी। एक माँ जो अपने बच्चे से प्रेम करती है वह उसकी बीमारी में सारी रात जागकर भी उसकी देखभाल करती है, यह करना उसकी लालसा नहीं है, परन्तु यह उसके वास्तविक अगापे प्रेम के अंतर्गत किया गया कार्य है।

कहने का अभिप्राय यह है कि अगापे प्रेम भावनाओं से उत्पन्न होने वाली कोई आकस्मिक उमंग नहीं है। वरन, अगापे प्रेम हमारी इच्छा-शक्ति का कार्य है, एक जानबूझकर किया गया कार्य। इसीलिए परमेश्वर हमें आज्ञा दे सकता है कि हम अपने शत्रुओं से प्रेम करें (मत्ती 5:44; निर्गमन 23:1-5)। वह हमें यह आज्ञा नहीं दे रहा है कि हम अपने शत्रुओं के प्रति "एक अच्छी भावना रखें" या उन्हें "पसंद" करें, वरन उनके प्रति प्रेम के साथ व्यवहार करें। अगापे प्रेम आज्ञाकारिता तथा प्रतिबद्धता के साथ सम्बन्धित है, न कि अनिवार्यतः भावनाओं और अनुभूतियों के साथ। किसी के प्रति "प्रेम" रखने का अर्थ है, उसके दीर्घकालीन आशीष और लाभ की कामना करना।

2. फिलियो प्रेम

इसका अर्थ होता किसी व्यक्ति या वस्तु में विशेष रुचि रखना, अधिकांशतः किसी निकट संबंध के साथ, जैसे कि भाई या मित्र के प्रति। शब्द फिलियो का अर्थ है घनिष्ठ भावनात्मक संबंध रखना, और इसलिए इसे घनिष्ठ मित्रता या भाईचारे के "प्रेम" के लिए प्रयोग किया जाता है। आप अपने शत्रुओं से "अगापे" कर सकते हैं, परन्तु आप उनके साथ "फिलियो" नहीं हो सकते हैं। फिलियो एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे के प्रति स्नेह, भावना, पसंद रखने पर बल देता है। नया नियम में इसे अकसर भाईचारे की प्रीति के लिए प्रयोग किया है।

प्रेम का उद्गम

अगापे प्रेम का उद्गम स्थल परमेश्वर का हृदय है। प्रेम में होकर, परमेश्वर पिता ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले चुन लिया (इफिसियों 1:4)। यह किसी को पता नहीं था, स्वर्गदूतों को भी नहीं।

प्रेम का प्रकटीकरण

परमेश्वर ने अपने पूर्वज्ञान में और त्रिएक परमेश्वर की सहमत इच्छा में, प्रेम को मानव इतिहास में प्रगट करना चाहा (प्रेरितों 2:23)। सही समय के अनुसार परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम को प्रगट किया, अपने इकलौते पुत्र को संसार में भेजने के द्वारा। जब बैतलहम में मसीह का जन्म हुआ और उसे चरनी में लेटाया गया, तब स्वर्गदूत भी आश्चर्यचकित थे।

चरवाहे और विद्वान उसकी आराधना करने के लिए आए (1यूहन्ना 4:9; लूका2:14,20; मत्ती2:11)।

प्रेम को व्यक्त करना

परमेश्वर ने अपना प्रेम न केवल देहधारण करने के द्वारा प्रगट किया परन्तु उसे कलवरी के क्रूस पर भी प्रकट किया। उसने हमारे लिए अपना लहू बहा दिया। यहोवा को यह भाया कि परमेश्वर के प्रेम को प्रगट करने के लिए (रोमियों 5:8) उसे घायल करे (यशायाह 53:10)।

प्रेम जो हमारे हृदयों में उडेला गया

अन्ततः, परमेश्वर ने अपना प्रेम हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा में होकर उड़ेल दिया (रोमियों 5:5)।

"देखो पिता ने हमसे कैसा प्रेम किया है" (1 यूहन्ना 3:1)। वह प्रेम जो अनंतकाल से परमेश्वर के हृदय में था, चरनी में प्रगट हुआ, उसके प्रिय पुत्र के द्वारा क्रूस पर दिखाया गया, और अन्ततः हमारे हृदयों में पवित्र आत्मा के द्वारा उडेला गया "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया..." (यूहन्ना 3:16)।

(देखिए: Harvest Times for your family Vol.12 issue 12 December 2015)
यह लेख डॉ. कोशी मैथ्यू द्वारा लिखित एवं जी. एल. एस. मुंबई द्वारा मई 2023 में प्रकाशित "सत्तर प्रचार संदेश" नामक पुस्तक में भी उपलब्ध है।

बाइबल अध्ययन: थिस्सलुनीकियों की पत्री

इव्हें. पी. बी. शमूएल, राजस्थान

पिछले अंक में हमने थिस्सलुनीकियों की पत्री के चौथे अध्याय के पहले भाग (4:1-12) का अध्ययन किया था, जिसमें हमने:

(1) मसीही विश्वासियों के नैतिक जीवन (4:1-8)

(2) भाईचारे के प्रेम की समझ (4:9-10)

(3) तथा सभ्य आचरण (4:11-12)

के विषय में सीखा था।

इस अंक में हम बाइबल की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शिक्षा - "कलीसिया का मेघारोहण, अर्थात, प्रभु यीशु मसीह का पुनरागमन और विश्वासियों का बादलों में उठा लिया जाना" (4:13-18) के विषय में अध्ययन करेंगे।

प्रेरित पौलुस इस भाग में थिस्सलुनीके के विश्वासियों के विश्वास की घटी (3:10) को दूर करते हुए उन्हें कई महत्वपूर्ण और नई जानकारियाँ प्रदान करता है।

इस भाग में वह दो झुण्डो के विषय में चर्चा करता है: (i) जो यीशु मसीह में सो गए हैं, और (ii) जो लोग प्रभु यीशु के आगमन तक बचे रहेंगे। इन दोनों झुण्ड के मिलन के विषय में पौलुस इस भाग में जानकारी देता है।

1. जो यीशु मसीह में सो गए हैं उन के विषय में जानकारी।

a) तुम अज्ञानता में न रहो (4:13)।

परमेश्वर का वचन हमें सब प्रकार की आवश्यक जानकारियाँ प्रदान करता है। मनुष्य सब से ज्यादा अपने भविष्य के बारे में चिंता करता है और मृत्यु के बाद के जीवन के विषय में अलग-अलग धारणाएं रखता है। परमेश्वर का वचन इसके संबन्ध में भी पर्याप्त और सही जानकारी देता है।

b) तुम औरों की नाई शोक मत करो (4:13)।

विश्वासी लोगों को जिनके जीवन में एक जीवित आशा है, दूसरों की नाई शोक करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि जो लोग प्रभु में सो गए हैं उनसे दुबारा मिलने की उम्मीद, परमेश्वर का वचन हमें देता है।

हमें दूसरों के समान दुख नहीं मनाना चाहिए उसके दो कारण हैं: पहिला, विश्वासियों को परमेश्वर से प्रकाशन है जो उन्हें आशा देता है और दूसरा, मसीह के साथ उनका एक महिमायुक्त भविष्य है। जिनके जीवन में इस प्रकार की आशा नहीं है वे शोक मनाते हैं।

c) उनके शरीर पृथ्वी के भीतर सोए हुए हैं लेकिन उनके प्राण और आत्मा प्रभु की उपस्थिति में विश्राम करते हैं।

मनुष्य परमेश्वर की अद्भुत सृष्टि है। परमेश्वर ने न केवल उसको इस संसार में रहने योग्य एक शरीर दिया; लेकिन परमेश्वर के साथ स्वर्गलोक में रहने योग्य प्राण और आत्मा भी उस के अंदर समाया था। गैर-भौतिक (प्राण और आत्मा) भाग का भौतिक (शरीर) भाग से अलगाव ही मृत्यु है।

विश्वासी के मृत शरीर को पुनरुत्थान होने तक "सोया हुआ" कहते हैं। नया नियम में मृत्यु को नींद के रूप में कई जगहों में बताया गया है (मरकुस 5:39; यूहन्ना 11:11; 1 थिस्स. 4:13; 5:10)। यह शब्द विश्वासियों के जी उठने की उम्मीद को दर्शाता है। शरीर की नींद पृथ्वी के भीतर है जब तक वह पुनरुत्थित नहीं हो जाती, एक महिमा युक्त स्वरूप में बदलती और प्राण से पुनः जुड़ जाती है।

जब प्राण और आत्मा शरीर से अलग हो जाता है, उसी समय वह प्रभु की उपस्थिति में चला जाता है। मसीही जो शरीर में अनुपस्थित है वह प्रभु के साथ है (2 कुरि. 5:8; फिल. 1:23)।

इसलिए परमेश्वर के लोगों को विश्वासियों के आत्मा के लिए कुछ करने की जरूरत नहीं है क्योंकि उनकी आत्मा प्रभु की उपस्थिति में शांति और विश्राम का अनुभव करती है और पुनरुत्थान के समय तक प्रभु की उपस्थिति में रहेगी।

d) प्रभु के आगमन के समय में प्रभु उन्हें भी साथ ले आएगा (4:14)।

यहां पर पौलुस प्रभु यीशु में सोए हुए विश्वासियों के संबन्ध में एक महत्वपूर्ण जानकारी देता है। मृत विश्वासियों के संबन्ध में थिस्सलुनीके के विश्वासियों के

लिए यह एक नई जानकारी भी थी।

"यदि हम प्रतीति करते हैं ....." इस का बेहतर अनुवाद इस प्रकार है, "क्योंकि हम अवश्य ही प्रतीति करते हैं, कि यीशु मरा और जी भी उठा ...." एक विश्वासी के पुनरुत्थान की निश्चयता, मसीह के पुनरुत्थान की सच्चाई पर आधारित है। कलीसियाई युग के आरंभ से लेकर प्रभु यीशु के दुबारा आगमन तक जितने भी विश्वासी लोग मसीह में सोए हुए है, उन सब के प्राण यीशु मसीह के साथ पुनरुत्थित होने के लिए लौट आएंगे। प्रभु यीशु मसीह हमारे प्राणों का रखवाला है (1 पतरस 2:25)। एक विश्वासी का प्राण और आत्मा प्रभु यीशु के हाथों में हमेशा के लिए सुरक्षित रहता है।

जब एक व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करता है तब वह प्रभु के साथ एक अटूट संबन्ध में प्रवेश करता है। इसके बाद चाहे वह जीवित रहे या प्रभु में सो जाए, उसका जीवन सदा प्रभु में बना रहता है और जहां प्रभु रहेगा वहां वह भी उसके साथ रहेगा (1 थिस्स. 5:10, 11)। यह कितने आनंद और शांति का विषय है!

e) वे कभी हमारे पीछे नहीं रह जाएगे (4:15)।

प्रेरित पौलुस को इन सच्चाईयों का प्रकाशन स्वयं यीशु मसीह की ओर से मिला था। यह एक सीधा प्रकाशन था। यहां पर पौलुस इस बात को स्पष्ट करता है, जो लोग प्रभु के आगमन तक बचे रहेंगे वे किसी भी रीति से सोए हुओं से आगे न बढ़ेंगे। प्रभु यीशु के आगमन के समय मृत और जीवित विश्वासियों में कोई अंतर नहीं होगा, दोनों झुण्ड एक साथ प्रभु की महिमा में प्रवेश करेंगे। पौलुस इस बात का खुलासा 16 वीं और 17 वीं आयतों में करता है।

2. प्रभु यीशु मसीह के आगमन के समय के घटनाक्रम:

a) प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा (4:16)।

इस घटनाक्रम की सब से पहिली घटना है यीशु मसीह का स्वर्ग से उतरना। प्रभु यीशु मसीह अभी पिता परमेश्वर के दाहिने ओर स्वर्ग में विराजमान है (रोमि. 8:34; कुलु. 3:1; इब्रा. 1:3)। प्रभु इस स्थान को छोड़ कर मध्य आकाश की ओर उतरेगा। प्रभु के स्वयं वचनों के अनुसार स्वर्गदूत ने ज़ोर देकर कहा कि

यह वही यीशु होगा जो कि बादलों पर चढ़कर ऊपर गया था (प्रेरि. 1:11)।

प्रभु यीशु मसीह का दुबारा आगमन इतिहास की एक महान घटना होगी। यह कलीसिया की सब से श्रेष्ठ और महान आशा है। संत पौलुस जैसे लाखों और करोड़ों विश्वासी लोगों ने प्रभु के आगमन को अपने ही जीवन काल में देखने का इंतजार किया था।

निकट भविष्य में होनेवाली यह घटना हमारी आशा को निरंतर बढ़ानी चाहिए और हमारे प्रभु से मिलने की तैयारी में हमें जीवन बिताना चाहिए। प्रभु यीशु मसीह के आगमन के दो चरण होगें: पहिला है, विश्वासियों के लिए मध्य आकाश में उतरना। दूसरा है, विश्वासियों के साथ पृथ्वी पर राज्य करने के लिए आना। इस के बीच सात साल का अन्तराल है जिस समय पृथ्वी पर महाक्लेश होगा। उस समय सुनाई देने वाली अलग-अलग आवाज़ें :-

16 वीं आयत में आवाजों का उल्लेख एक ऊंची ललकार, प्रधान दूत का शब्द और परमेश्वर की तुरही को; विश्वासियों के लिए मसीह के आगमन की सूचना और स्वर्ग की घोषणा के रूप में समझना चाहिए।

- **ललकार (एक ऊंची आवाज)**

  यह ऊंची आवाज स्वयं प्रभु यीशु मसीह की आवाज हो सकती है। यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु मसीह ने कई बार इस बात का दावा किया था कि,जितने उस पर विश्वास करते हैं; उन्हें वह अंतिम दिन जिला उठाएगा (यूहन्ना 6:39, 40, 54)। यूहन्ना 5:25, 28 में यह बात और भी स्पष्ट है, "जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे।" प्रभु यीशु अपने आप में जीवन रखता है (यूहन्ना 5:26)। उसकी आवाज में जीवन प्रदान करने की सामर्थ है (यूहन्ना 11:43, 44)।

- **प्रधान दूत का शब्द**

  मिकाईल ही एक मात्र प्रधान दूत है जिसका नाम बाइबिल में अंकित है (यहूदा 6)। ये आवाज प्रभु के आगमन पर स्वर्गदूतों की उपस्थिति को दर्शाने के लिए और परमेश्वर के लोगों के संरक्षण को भी बताने के लिए है।

- **परमेश्वर की तुरही**

  पुराना नियम में तुरहियाँ परमेश्वर के लोगों को कई प्रकार के संकेतों को

देने के लिए इस्तेमाल की जाती थीं - इकट्ठे होने के लिए, युद्ध की तैयारी के लिए, प्रस्थान करने के लिए, लोगों को सतर्क करने के लिए आदि।

प्रेरित पौलुस इसी तुरही के बारे में 1 कुरि. 15:52 में भी बताता है। इस संदर्भ में परमेश्वर की तुरही को, जी उठे और बदले हुए विश्वासियों को अपने स्वर्गीय घर की ओर प्रस्थान करने के संकेत के रूप में हम समझ सकते हैं।

b) उस समय सबसे पहिले जो मसीह में मरे हैं जी उठेंगे (4:16)।

प्रभु यीशु मसीह के आगमन के संबन्ध में सब से पहिली बात, यीशु मसीह का स्वर्ग से उतरना है। उस समय स्वर्ग से अलग-अलग आवाजें सुनाई देंगी। अगली मुख्य घटना है, मृत विश्वासियों का जी उठना।

यहां पर जो वाक्यांश "मसीह में" का संदर्भ मुख्यतः कलीसिया युग के विश्वासियों से है। मसीह में मृतको के शरीर जी उठेंगे। पुराना नियम के भक्त लोग, महाक्लेश के अंत में जिलाए जाएंगे (दानि. 12:2)।

यह कितनी अद्भुत बात है कि हज़ारों वर्षों पहिले गाड़े गए शरीर, जिन्हें जलाकर मार डाला गया, जो समुद्र में डूब मरे; इन सब शरीरों का पल भर में जिलाया जाना होगा। यह हमारी समझ से परे है। इसी कारण प्रेरित पौलुस ने ज़ोर देकर कहा कि यह प्रकाशन स्वयं प्रभु यीशु से आया था। भविष्य में होनेवाली यह घटना वैसे ही निश्चित है जैसे कि प्रभु यीशु मसीह का जिलाया जाना पुराना इतिहास का सत्य था। परमेश्वर जिसने अपने वचनों से इस संसार को रचा, वह विश्वासियों के सड़े गले शरीरों को एक ही क्षण में पुनः जोड़ने हेतु पूर्ण सक्षम है।

c) जो जीवित हैं, वे बदल जाएंगे और उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे (4:17; 1 कुरि. 15:51, 52 से तुलना करें)।

पौलुस अब तक "प्रभु यीशु में सोए हुए" विश्वासियों के भविष्य के बारे में थिस्सलुनीके के लोगों को समझा रहा था। यह आयत उस बात को समझाती है कि जीवित विश्वासियों का क्या होगा।

17 वीं आयत को 1 कुरिन्थियों 15:51, 52 आयतों के साथ मिलाकर समझना जरूरी है। मृतक विश्वासियों के शरीरों के जी उठने के बाद वे जो अब तक

जीवित हैं उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें। इस के बीच जीवित विश्वासियों के शरीरों के रूपान्तरण के विषय में पौलुस 1 कुरिन्थियों 15:51,52 आयतों में बताता है।

हम अब जो शरीर में जीवन बिता रहे हैं, इस संसार में रहने योग्य हैं। इस शरीर का रूपान्तर होना जरूरी है। इस शरीर की दुर्बलता के विषय में परमेश्वर का वचन कई बातें बताता है। हमारा शरीर तम्बू सरीखा घर है जो गिराया जाएगा (2 कुरि. 5:1), यह दीन-हीन देह है (फिल. 3:21), यह देह नाशमान और मरनहार है (1 कुरि. 15:53)।

जीवित विश्वासी लोग बादलों पर उठा लिए जाने से पहिले, प्रभु उनके दीन-हीन देह का रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा। उस समय नाशमान अविनाश को पहिन लेगा और मरनहार अमरता को पहिन लेगा। दूसरे शब्दों में इस को हमारे शरीर का छुटकारा कहते हैं। परमेश्वर ने हमारे संपूर्ण छुटकारे (आत्मा और शरीर के छुटकारा) के लिए कार्य किया है।

कलीसिया का उठा लिया जाना (मेघारोहण), पुराना नियम में अज्ञात एक भेद था। इसलिए प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 15:51 में ऐसा बताता है, "देखो मैं तुमसे भेद की बात कहता हूं: कि हम सब नहीं सोएंगे अर्थात नहीं मरेंगे।" प्रभु के वापस आने पर जो लोग जीवित रहेंगे, वे सभी बदल जाएंगे और जी उठे विश्वासियों के साथ प्रभु को मिलने के लिए हवा में उठा लिए जाएंगे।

इससे पहले कि हम सब उठा लिए जाएं, विशव्यापी कलीसिया के समस्त विश्वासी जन क्षण भर के लिए इस संसार में इकत्रित हो जाएंगे। हमारे प्रभु के साथ उस स्वर्गीय मिलन से पहिले, हमारे प्रिय जनों साथ इस पृथ्वी पर का मिलन कितना आनंदमय और तसल्ली की बात है!

मृत विश्वासियों का जी उठना, जीवितों का रूपान्तरण और सबका हवा में उठा लिया जाना, इन सब घटनाओं में परमेश्वर के महान और अद्भुत सामर्थ के प्रगटीकरण को हम देख सकते हैं।

d) प्रभु यीशु मसीह के साथ हमारा मिलन (4:17)।

प्रभु यीशु मसीह के साथ हमारा मिलन इस घटनाक्रम की सब से प्रमुख बात है। सभी पुनरुत्थित और रूपांतरित विश्वासी लोग एक साथ उठा लिए जाएंगे और

मध्य आकाश में मसीह के साथ जुड़ जाएंगे। प्रभु उनको उस स्थान पर ले जाएगा जिसे वह वर्तमान में तैयार कर रहा है (यूहन्ना 14:2-3)।

पहली सदी से लेकर अब तक के भक्त लोग प्रभु के साथ इस आनंदमय मिलन के इंतजार में जीवन बिता रहे थे। यह मिलन एक अद्भुत प्रकार का मिलन है। इस में विश्वभर के सब विश्वासी लोग शामिल होंगे, यह मिलन मध्य आकाश में होगा और इस मिलन के बाद हम प्रभु से और प्रभु के लोगों से कभी जुदा नहीं होंगे।

e) प्रभु के साथ सदा रहना (4:17)।

यह कलीसिया की सबसे बड़ी आशा है कि वह प्रभु को देखे और उसके साथ हमेशा के लिए जुड़ जाए। यह प्रभु यीशु मसीह की भी इच्छा थी कि प्रभु के लोग उसके साथ रहें (यूहन्ना 14:3;17:24)।

विश्वासियों के लिए प्रभु यीशु मसीह की महानता और महिमा उस अनंतता में भी प्रमुख विषय होगी। स्वर्ग के समस्त भाग और मूल्य, अनंत जीवन की समस्त आशीषें, उतनी महत्व नहीं रखतीं जितनी उद्धारकर्ता प्रभु की उपस्थिति उनके लिए महत्व रखती है। प्रभु यीशु मसीह का आगमन इस युग के हर एक विश्वासी की धन्य आशा है (तीतुस 2:13)।

इस प्रकाशन का व्यावहारिक परिणाम यह होना चाहिए कि हर एक विश्वासी का उत्साह बढ़े और इन वचनों से वे एक दूसरे को उत्साहित करें, और प्रभु यीशु के आगमन के इंतजार में जीवन बिताएं।

लेखक :
न्यायियों की पुस्तक विशेष रूप से इसके लेखक का नाम नहीं बताती है। परम्परा के अनुसार भविष्यद्वक्ता शमूएल को न्यायियों की पुस्तक का लेखक माना जाता है। आन्तरिक प्रमाण संकेत देते हैं, कि न्यायियों का लेखक न्यायियों की अवधि के थोड़े समय पश्चात् ही रहा था, परिणामस्वरूप शमूएल इस योग्यता को पूरा करता है।

लेखन तिथि :
न्यायियों की पुस्तक का ईसा पूर्व 1045 और 1000 के मध्य ही किसी समय लिखे जाने की सम्भावना है।

लेखन का उद्देश्य :
न्यायियों की पुस्तक को दो खण्डों में विभाजित किया जा सकता है: (1). अध्याय 1-16 जो इस्राएलियों के द्वारा कनानियों को पराजित करने के लिए की गई लड़ाइयों से होने वाले छुटकारे के आरम्भ के वृतान्त को देते हुए और पलिश्तियों की पराजय और शिमशोन की मृत्यु के साथ अन्त होती है; (2). अध्याय 17-21 जिसे एक परिशिष्ट के रूप में जाना जाता है और जो पिछले अध्यायों से सम्बन्धित नहीं है। इन अध्यायों को इस रूप में उल्लिखित किया जा सकता है, "उन दिनों में इस्राएलियों में कोई राजा न था (न्यायियों 17:6; 18:1; 19:1; 21:25)." रूत की पुस्तक मूल रूप से न्यायियों की पुस्तक का ही एक भाग है, परन्तु 450 ईस्वी सन् में इसे वहाँ से हटाते हुए स्वयं में एक पृथक पुस्तक बना दिया गया।

कुँजी वचन :
न्यायियों 2:16-19: "तौभा यहोवा उनके लिये न्यायी ठहराता था जो उन्हें लूटने वालों के हाथ से छुड़ाते थे। परन्तु वे अपने न्यायियों की भी नहीं मानते थे; वरन् व्यभिचारिन के समान पराये देवताओं के पीछे चलते थे और उन्हें दण्डवत् करते थे; उनके पूर्वज जो यहोवा की आज्ञाएँ मानते थे, उनकी उस लीक को उन्होने शीघ्र ही छोड़ दिया, और उसके अनुसार न किया, जब जब यहोवा उनके लिये न्यायी को ठहराता तब तब वह उसे न्यायी के संग रहकर उसके जीवन भर उन्हें शत्रुओं के हाथ से छुड़ाता था; क्योंकि उनका कराहना जो अन्धेर और उपद्रव करनेवालों के कारण होता था, सुनकर दुःखी था। परन्तु जब न्यायी मर जाता, तब वे फिर पराए देवताओं के पीछे चलकर उनकी उपासना करते, और उन्हें दण्डवत् करके अपने पुरखाओं से अधिक बिगड़ जाते थे; और अपने बुरे कामों और हठीले चाल को नहीं छोड़ते थे।"

न्यायियों 10:15: "इस्राएलियों ने यहोवा से कहा, 'हम ने पाप किया है; इसलिये जो कुछ तेरी दृष्टि में भला है वही हम से कर; परन्तु अभी हमें छुड़ा।"

न्यायियों 21:25: "उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक जान पड़ता था वही वह करता था।"

संक्षिप्त सार :
न्यायियों की पुस्तक एक दुखान्त वृतान्त है, कि कैसे यहोवा [परमेश्वर] ने उसकी सन्तान को वर्ष-दर-वर्ष, एक-सदी-के-पश्चात् दूसरी सदी में अवसर प्रदान किए। यहोशू की पुस्तक की तुलना में न्यायियों की पुस्तक एक विपरीत दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास हैं, जो भूमि पर विजय पाने के लिए इस्राएलियों को उनकी आज्ञाकारिता के परमेश्वर की आशीषों को प्रगट करती है। वे अनाज्ञाकारी और मूर्तिपूजक रहते हुए, अपनी ही पराजय का कारण बन गए। तथापि जब कभी भी उन्होंने अपने बुरे मार्गों से पश्चात् किया और उसके नाम की दुहाई दी, तब परमेश्वर अपने प्रेमी हाथों को उनकी ओर से पीछे नहीं हटाया (न्यायियों 2:18)। इस्राएल के 15 न्यायियों के द्वारा, परमेश्वर ने अब्राहम के साथ बाँधी अपनी प्रतिज्ञा को सम्मान देते हुए उसकी सन्तान की सुरक्षा की और उन्हें आशीष दी (उत्पत्ति 12:2-3)।

यहोशू और उसके समकालीन लोगों की मृत्योपरान्त, इस्राएली बाल देवता और अशेरा देवी की पूजा करने लगे। परमेश्वर ने झूठे देवताओं की आराधना करने से होने वाले परिणामों में से इस्राएलियों को दुखित होने दिया। ऐसे समय में ही परमेश्वर के लोग यहोवा से सहायता प्राप्त करने के लिए पुकार उठते थे। परमेश्वर ने उसकी सन्तान को धार्मिकता से भरे हुए जीवन को यापन करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए न्यायियों को प्रदान दिया। परन्तु समय समय पर वे अपना मुँह परमेश्वर की ओर से फेर लेते थे और वापस दुष्टता से भरे जीवन की ओर मुड़ जाते थे। तथापि, अब्राहम के साथ बाँधी हुई वाचा में अपने प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए न्यायियों की पुस्तक के 480 वर्षों की अवधि में परमेश्वर अपने लोगों को उनको सताने वालों से बचाता रहा।

कदाचित् सबसे अधिक उल्लेखनीय न्यायी 12वां न्यायी शिमशोन है, जो क्रूर पलिश्तियों के शासन के अधीन 40 साल बन्धुवाई के पश्चात् इस्राएलियों को नेतृत्व प्रदान करने के लिए आया। शिमशोन ने परमेश्वर के लोगों को पलिश्तियों के ऊपर विजय दिलाने में अगुवाई दी, जहाँ पर उसने 20 वर्षों तक इस्राएल के न्यायी के रूप में कार्य करते हुए स्वयं के जीवन को दे दिया।

प्रतिछाया :
शिमशोन की माता को की गई उदघोषणा कि वह इस्राएल की सन्तान के मार्गदर्शन के लिए एक पुत्र को जन्म देगी वास्तव में मरियम को मसीह के जन्म की उदघोषणा की प्रतिछाया है। परमेश्वर ने दोनों ही स्त्रियों के पास स्वर्गदूत को भेजा था और उसने यह कहा था, "गर्भवती हो और एक बेटे को जन्म दे" (न्यायियों 13:7; लूका 1:31) जो परमेश्वर के लोगों का मार्गदर्शन करेगा।

लोगों के द्वारा किये जाने वाले पाप और परमेश्वर को त्याग देने के पश्चात् भी परमेश्वर के द्वारा तरस में होकर उनका छुटकारा करना वास्तव में क्रूस के ऊपर मसीह के चित्र को प्रस्तुत करता है। प्रभु यीशु उसके लोगों को — उनके पापों से छुड़ाने के लिए — मर गया — उन सभों के लिए जो उसमें विश्वास करेंगे। यद्यपि बहुत से जो उसकी सेवकाई के समय उसके पीछे चले आखिर में गिर गए और उसे अस्वीकार कर दिया, परन्तु तौभी वह अपनी प्रतिज्ञा के प्रति विश्वासयोग्य बना रहा और क्रूस पर उनके लिए मरने के लिए चला गया।

व्यवहारिक शिक्षा :
अनाज्ञाकारिता सदैव ही न्याय को ले आता है। इस्राएली इसके लिए एक आदर्श नमूने को प्रस्तुत करते हैं, कि हमें क्या नहीं करना चाहिए। अनुभव से सीखने की अपेक्षा कि परमेश्वर उसके विरूद्ध होने वाले विद्रोह को सदैव दण्डित करेगा, वे निरन्तर उसकी आज्ञा की अवहेलना करते हैं और परमेश्वर की नाराजगी और अनुशासन से दुःख उठाते हैं। यदि हम निरन्तर उसकी आज्ञा की अवहेलना करते रहें, तब हम परिणामस्वरूप परमेश्वर के अनुशासन को अपने ऊपर ले आते हैं, इसलिए नहीं क्योंकि वह हमें दुःख देने से आनन्दित होता है, "अपितु प्रभु जिस से प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े भी लगाता है" (इब्रानियों 12:6)।

न्यायियों की पुस्तक परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य लोगों के लिए एक नियम है। "यदि हम अविश्वासी हों, तौभी वह विश्वासयोग्य बना रहता है" (2 तीमुथियुस 2:13)। हो सकता है, कि हम उसके प्रति अविश्वासी हो जाएँ, जैसे इस्राएली थे, तौभी वह हमें बचाने और हमें सुरक्षित रखने के लिए विश्वासयोग्य है (1 थिस्सलुनीकियों 5:24) और वह हमें तब क्षमा कर देता है, जब हम उसकी क्षमा की मांग करते हैं (1 यूहन्ना 1:9). "वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरो। परमेश्वर सच्चा है, जिसने तुम को अपने पुत्र हमारा प्रभु यीशु मसीह की संगति में बुलाया है" (1 कुरिन्थियों 1:8-9)।

असली क्रिसमस

बहन तब्बसुम रॉय पेस, भिवाड़ी, राजस्थान

केवल सुहानी ही नहीं पूरा शहर क्रिसमस की तैयारियों में डूबा हुआ था। सजावट की जा चुकी थी, उनके लकड़ी के पुराने पर विशाल घर को सजावटी लड़ियों से सजाया जा चुका था और क्रिसमस ट्री पर पुराने और नए मिले जुले सजावटी सामान आकर्षण का केंद्र बने हुए थे। उनके घर में चारों ओर रौनक और आने जाने वालों का तांता लगा हुआ था। कोई प्लम केक ले के आ रहा था तो कोई तोहफे। बच्चे आज बहुत अच्छा बर्ताव कर रहे थे, आखिर सेंटा क्लॉज से तोहफे जो मिलने वाले थे। उन्हें विश्वास था कि चाहे कितनी कड़ाके की ठंड पड़े, उनका तोहफ़ा लाने में सेंटा देर नही करेंगे। नताशा ने भी अन्य बच्चों के समान सेंटा को एक पत्र लिख कर बताया था कि उसे तोहफे में क्या चाहिए। मैं आपको नहीं बताऊंगी कि उसने क्या मांगा था पर जब हम क्रिसमस के दौरान अपने चारों ओर का माहौल देखते हैं तो क्या प्रभु यीशु मसीह के जन्म का संबंध प्रेम से साफ़ नहीं दिखाई देता है?

प्रेम जिसे हम अपने प्रियजनों से इस दौरान प्रगट करते हैं, उन्हें तोहफे देकर, उनके प्रिय भोजन बनाकर या उनके लिए केक बना कर। यह सभी दिखाई देने वाले चिन्ह जो कि प्रभु यीशु मसीह के जन्म की खुशी से संबंधित माहौल के आगमन का प्रतीक बन चुके हैं।

"क्या प्रभु यीशु मसीह का संसार में जन्म बढ़िया भोजन और साज सज्जा से कहीं अधिक किसी और बात का प्रतीक नहीं है? नताशा की दादी ने प्रेमपूर्वक पूछा। अम्माची क्रिसमस के खिलाफ नहीं थी उन्हें तो केवल इस बात का दुख था कि लोग त्योहार मनाने के चक्कर में प्रभु यीशु मसीह के जन्म की वजह को अनदेखा करने लगे थे। उनका प्रश्न था कि प्रभु यीशु ने हमें उनकी मृत्यु को याद रखने के लिए क्यों कहा, जन्म को क्यों नहीं?

जिस प्रकार यह सजावट और पकवान बनाना इस त्योहार के आगमन का चिन्ह है, क्या तुम बता सकती हो कि प्रभु यीशु मसीह के वास्तव आगमन के क्या चिन्ह थे?

प्रभु यीशु मसीह के जन्म से पूर्व किसी का जन्म हुआ था कि वह उनके लिए मार्ग तैयार कर सके। क्या तुम बता सकती हो कि वह कौन था? चलो मैं तुम्हें एक संकेत देती हूं। इस व्यक्ति ने प्रभु यीशु को बपतिस्मा भी दिया था।

नताशा, जिस प्रकार तुम क्रिसमस की तैयारियों में जुटी हो, क्या तुम प्रभु यीशु मसीह के पुनः आगमन की तैयारी भी कर रही हो?

पवित्र वचन में साफ़ लिखा है, " इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ" (मत्ती 28:18 से 20)।

क्या तुम उस आज्ञा का पालन कर रही हो? अम्माची के स्वर में अब थोड़ी कठोरता का पुट था। क्या जिस प्रकार तुम क्रिसमस के दिन के लिए तैयार हो उसी प्रकार प्रभु यीशु मसीह के पुनः आगमन के लिए तैयार हो? यह परमेश्वर का हमारे लिए प्रेम ही था जिसके लिए उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे पापों के लिए कुर्बान होने भेजा और यह प्रभु यीशु मसीह का हमारे लिए प्रेम ही था जिसके कारण उन्होंने अपना प्राण हमारे लिए क्रूस पर दिया ताकि हम छुड़ाए जाएं। प्रभु यीशु मसीह का जन्म क्रूस पर उनका हमारे लिए प्रेम दिखाने के लिए हुआ था। क्या यह याद रखना अधिक महत्वपूर्ण नहीं है?

प्रिय बच्चो, प्रभु यीशु मसीह चाहते हैं कि हम उन्हें वर्ष में एक बार नहीं बल्कि हर दिन याद करें। वह हमसे व्यक्तिगत संबंध रखना चाहते हैं। अच्छे संबंध की निशानी निरंतर वार्तालाप है। क्या आपका प्रभु यीशु से इस प्रकार का संबंध है? यदि नहीं तो बाकी सब बातें व्यर्थ हैं।

प्रभु के दास डॉ. ग्राहम स्टेंस की जीवनी

साभार - इव्हें. क्रूपानंद, केरल

(गतांक से आगे ...)

मनोहरपुर के 14 वें वार्षिक जंगल बाइबल शिविर के समाप्त हो जाने के बाद 23 जनवरी, 1999 को आधी रात के समय जब डॉ. स्टेन्स अपने दो बेटों फिलिप (10 वर्ष) और तिमोथी (6 वर्ष) के साथ अपनी जीप में सो रहे थे, लगभग 12:20 बजे 50 से अधिक लोगों की भीड़ मनोहरपुर के पास पहुंची। वे लाठियों और त्रिशूल से लैस खेतों से भागते हुए आए। जैसे ही वे उनकी जीप (पुरानी स्टेशन वैगन) के पास पहुँचे, वे चिल्लाने लगे। उन्होंने पहले टायरों पर कुल्हाड़ी से वार किया, जिससे उनकी हवा निकल गई। फिर उन्होंने खिड़कियाँ तोड़ दीं और स्टेन्स को भागने से रोक दिया। ग्राहम स्टेन्स और उनके दोनों बेटों को बेरहमी से पीटा गया। तीनों को त्रिशूल से गोदा गया था। उन्होंने जीप के नीचे पैरा (पुआल) रखा और पेट्रोल डालकर आग लगा दी।

ऑस्ट्रेलिया से आए ग्राहम स्टेन्स के एक मित्र गिल्बर्ट वेन्ज़ भी मनोहरपुर में उपस्थित थे। उन्होंने बाहर सड़क पर लोगों का हंगामा सुना। वे चिल्ला रहे थे, "बाहर मत आओ, हम तुम्हें मार डालेंगे"। बेंज घर के अंदर थे और और उस घर दरवाजा बाहर से बंद कर दिया गया था। चूंकि वे अंदर फंसे हुये थे, उन्हें पता नहीं चला कि स्टेशन वैगन में आग लग गई है। लेकिन भीड़ की भयानक दहाड़ उन्हें सुनाई दे रही थी।

कुछ ही सेकंड में जीप आग की लपटों में घिर गई। कोई पानी लेकर आया और आग बुझाने की कोशिश की लेकिन उन्होंने उसे पकड़ लिया और खूब पीटते हुए भगा दिया। जले हुए शव एक-दूसरे से लिपटे हुए पाए गए। जो कोई भी डॉ. स्टेन्स को जानता था, वह कहता था कि उनके होठों पर एक ही नाम रहा होगा - प्रभु यीशु मसीह। हत्यारे वहीं खड़े होकर तीनों को जिंदा भूनते हुए देख रहे थे क्योंकि आग ने वाहन को भस्म कर दिया था। तत्कालीन भारतीय राष्ट्रपति के. आर नारायणन ने इसे “समय-परीक्षणित सहिष्णुता और सद्भाव का एक बड़ा विचलन” बताया। उन्होंने कहा कि यह अमानवीय हत्या दुनिया के काले कारनामों का भंडार है।

डॉ. स्टेन्स ने अपने जीवन के 35 वर्ष भारत में गरीबों और अशिक्षितों की मदद में बिताये थे। ग्राहम स्टेंस और उनके बेटे उस भूमि पर प्रभु यीशु मसीह के लिए शहीद हुए जिससे वे बहुत प्यार करते थे। प्रभु यीशु ने यूहन्ना 16:2-3 में कहा, “ऐसा समय आता है, कि जो कोई तुम्हें मार डालेगा, वह समझेगा कि वह परमेश्वर की सेवा कर रहा है। वे ऐसा इसलिये करेंगे क्योंकि उन्होंने पिता या मुझे नहीं जाना।”

अंतिम संस्कार में, हजारों लोग डॉ. स्टेंस और उनके दोनों बेटों को श्रद्धांजलि देने के लिए इंतजार कर रहे थे। ऐसा लग रहा था मानों पूरा बारीपदा थम गया हो, दुकानें बंद हो गईं और कई अधिकारी अंतिम संस्कार जुलूस में शामिल हुए। यह एक अलग तरह की विदाई थी। अधिकांश अंत्येष्टि में, या तो कोई करीबी रिश्तेदार या कोई मित्र उस कार्यक्रम में अगुवाई करता है। लेकिन यहां तो ऐसा कोई नहीं था। स्थानीय लोग और बाहर से आए हुए सभी लोग सभी कामों को कर रहे थे - मानों यह सब ईश्वरीय रूप से नियंत्रित था।

अंतिम संस्कार की सेवा में, लेप्रोसी मिशन के सभी सहवासी दुःख में थे। केवल श्रीमती ग्लेडिस स्टेंस ही उन्हें सांत्वना देने में सक्षम थी। बेटी एस्तेर और वह दोनों उनके साथ तीन ताबूतों के पास जमीन पर बैठे थे। जब संवेदनाएं व्यक्त की गईं और अन्य लोगों ने बाइबल से सांत्वना देने वाले पदों को पढ़ा, तो कई लोग श्रीमती ग्लेडिस और एस्तेर के साथ स्थानीय भाषा संथाली में निम्नलिखित भजन गाते हुए शामिल हो गए:

दीन यीशु जैसा कोई मित्र नहीं है,
नहीं, एक भी नहीं! नहीं, एक भी नहीं!
हमारी आत्मा की सभी बीमारियों को कोई और ठीक नहीं कर सकता,
नहीं, एक भी नहीं! नहीं, एक भी नहीं!
यीशु हमारे संघर्षों के बारे में सब कुछ जानता है,
वह दिन ढलने तक मार्गदर्शन करेगा,
दीन यीशु जैसा कोई मित्र नहीं है;
नहीं, एक भी नहीं! नहीं, एक भी नहीं!
ऐसा कोई भी पल नहीं जब वह हमारे निकट न हो,
नहीं, एक भी नहीं! नहीं, एक भी नहीं!
नहीं, रात बहुत अंधेरी है, लेकिन उसका प्यार हमें खुश कर सकता है,
नहीं, एक भी नहीं! नहीं, एक भी नहीं!

शेष अगले अंक में ...

बुद्धिमानी के साथ जीवन जीना

बहन ज्योति साहू, राजनांदगांव (छ.ग.)

“हर बुद्धिमान स्त्री अपने घर को बनाती है, पर मूढ़ स्त्री उस को अपने ही हाथों से ढा देती है।” नीतिवचन 14:1

“एक बुद्धिमान स्त्री घर को बनाती है,” अर्थात उसके कारण घर में शांति, आनन्द और हर एक भली बात पाई जाती है। इसके विपरीत एक मूर्ख स्त्री अपने परिवार के लिए इन बातों को नहीं कर सकती। ये बुद्धि का गुण है जो घर में एक स्त्री के द्वारा प्रवाहित होता है, और बुद्धि के मूल स्रोत तो परमेश्वर हैं। जो व्यक्ति परमेश्वर का भय मानता है, परमेश्वर उसे बुद्धि प्रदान करते हैं, इसलिए परमेश्वर के द्वारा दी गई बुद्धि के द्वारा ही ‘घर बनाने का कार्य’ एक स्त्री द्वारा सफल हो पाता है।क्योंकि परमेश्वर बुद्धि देने वाले परमेश्वर हैं इसलिए घर के कुशलतापूर्वक रहने का मुख्य कारण स्वयं परमेश्वर हैं।

परमेश्वर न्यायी हैं और वो मन को भी जाँचते हैं। वो हमारे द्वारा हमारे मन में की जाने वाली युक्तियों के अनुसार हमसे मनुष्यों के द्वारा वैसा ही व्यवहार होने देते हैं। जो बुरी युक्ति निकालते हैं, वे भ्रम में पड़ते हैं, परन्तु भली युक्ति निकालने वालों से करूणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है (नीतिवचन 14:22)।

परमेश्वर हमारे मनो को जांचने वाला परमेश्वर है। लोग नहीं जानते कि किस के विचारों में क्या है, परंतु परमेश्वर हर एक के मनों को जाँचते हैं, और वे लोगों को उभारते हैं कि किसके साथ कैसा व्यवहार किया जाए।

जो सीधाई से चलता वह यहोवा का भय मानने वाला है, परन्तु जो टेढ़ी चाल चलता वह उस को तुच्छ जानने वाला ठहरता है (नीतिवचन 14:2)। हमारे कार्य न सिर्फ़ हमारे कार्य को और हमें प्रगट करता है पर हमारे कार्य और हमारे चाल चलन हमारे और परमेश्वर के बीच के संबंध को भी प्रगट करते हैं। नीतिवचन का लेखक स्पष्ट रूप से लिखता है कि जो सीधाई से चलता है वह यहोवा का भय मानने वाला है। एक व्यक्ति के सीधाई से चलने के पीछे का मुख्य कारण यह है कि वह परमेश्वर का भय मानता है। इसके विपरीत, यदि एक व्यक्ति टेढ़ी चाल चलता है तो उसका मुख्य कारण यह है कि वह अपने मन में परमेश्वर का भय नहीं मानता पर परमेश्वर को तुच्छ जानता है। कोई व्यक्ति प्रगट रूप से तो यह नहीं कहता कि मैं परमेश्वर को तुच्छ जानता हूँ, लेकिन उस व्यक्ति का स्वभाव व चालचलन यह प्रगट कर देता है कि वह व्यक्ति परमेश्वर का भय मानता है या उसे तुच्छ जानता है।

अतः हमें परमेश्वर के साथ अपना संबंध सही रखना चाहिए जिसके परिणाम स्वरूप हमारे जीवन का हर क्षेत्र अच्छा होगा और हम सीधाई से चलने वाले बनेंगे।
नीतिवचन 14:3 में बताया गया है कि मूढ़ के मुंह में गर्व का अंकुर है, परन्तु बुद्धिमान लोग अपने वचनों के द्वारा रक्षा पाते हैं। जो व्यक्ति अपने मुंह से अपनी ही बड़ाई करे वह अपनी मूर्खता का प्रमाण देता है। बुद्धिमान व्यक्ति हर समय यह जाँचता है कि उसके मुंह के द्वारा किन शब्दों का इस्तेमाल हो रहा है, वह बोलने से पहले सोचता है।

मूढ़ लोग पाप का अंगीकार करने को ठट्ठा जानते हैं, परन्तु सीधे लोगों के बीच अनुग्रह होता है (नीतिवचन 14:9)। परमेश्वर पाप पर जयवंत होने के लिए अनुग्रह उन्हीं को देता है जो लोग ये मान लेते हैं कि वे पापी हैं। मूर्ख व्यक्ति अपने पाप को अंगीकार नहीं करता। यह बात उसे ठट्ठा प्रतीत होती है। उसे लगता है कि अपने पाप मान लेने से कोई लाभ नहीं और लोगों के सम्मुख यदि वह पाप का अंगीकार कर ले तो वह तुच्छ जाना जाएगा। पर जो व्यक्ति यह मान लेता है कि वह पापी है और उसने गुनाह किये हैं, परमेश्वर उसी व्यक्ति को पाप से बाहर निकलने के लिए सहायता देता है अर्थात उसे अनुग्रह प्रदान करता है। अतः हमें मूर्खों के समान नहीं बनना है पर सदैव ईमानदार बनना है ताकि परमेश्वर हम पर अनुग्रह करें।

बुद्दिमयन मनुष्य सोच-विचार कर अपने कदमों को आगे बढ़ाता है। “भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझ बूझ कर चलता है” (नीतिवचन 14:15)।

प्रभु यीशु ने हमें संतुलित जीवन जीना सिखाया है। उनके समय में कुछ लोग ऐसे भी थे जो उन पर विश्वास लाते थे पर जैसे ही कोई दूसरा उनका कान भरता वही लोग उनके विरोध में चले जाते थे, उन्हें प्रभु यीशु के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान नहीं था।

हमें बिरिया के यहूदियों के समान बनने की आवश्यकता है जो पौलुस का प्रचार बस सुन कर विश्वास नहीं करते थे पर पौलुस के वचन को पवित्रशास्त्र से जांच परख कर विश्वास करते थे। अतः हमें भी बुद्धिमान बनने की आवश्यकता है कि कोई हमें भरमाने न पाए, पर हम हर बात को परखना सीखें।

प्रभु हमारी सहायता करें कि हम परमेश्वर का भय मानें और सदैव उनके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

प्रभु की दासी श्रीमती थंकम्मा कोशी (1928 - 2023) के लिए प्रशंसा के शब्द ...

डॉ. कोशी मैथ्यू, मुंबई

"उसके पुत्र उठ उठकर उसको धन्य कहते हैं।" (नीतिवचन 31:28)

श्रीमती थंकम्मा कोशी का जन्म 25 मार्च 1928 को स्व. श्री वी. के. मथाई एवं स्व. श्रीमती सोसम्मा मथाई के परिवार में केरल प्रदेश के वाझुवाड़ी, मावेलीकरा में हुआ था। अपने परिवार के पांच भाईयों और बहनों में वे सबसे बड़ी थीं। कम आयु में ही उनका विवाह पुन्थला निवासी मम्पीलल परिवार के स्व. श्री टी. जे. कोशी से हुआ था। उन्हें बहन कृपा (जिन्हें स्व. श्री सी. वी. जॉर्ज ने भेजा था) के द्वारा सुसमाचार सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और उन्होंने कम आयु में ही प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में ग्रहण कर लिया। यद्यपि उस समय उनके पति ने उद्धार प्राप्त नहीं किया था, फिर भी श्रीमती थंकम्मा कोशी ने प्रभु के पीछे चलने और मसीही विश्वासी बपतिस्मा द्वारा प्रभु की आज्ञा का पालन करने का दृढ़ निश्चय लिया। बाद में जब उन्होंने अपने विवाह के मंगलसूत्र और अन्य गहनों को त्याग दिया तब उन्हें अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इसके बाद, विवाह तथा अंतिम-संस्कार के अवसरों पर सामाजिक बहिष्कार का उन्होंने सामना किया।

जब भाई टी. जे. कोशी मुंबई में काम कर रहे थे, तब श्रीमती थंकम्मा कोशी भी अपने दो पुत्रों - राजू और बाबू - के साथ मुंबई आ गईं। यही वो समय था जब उनके पति श्री कोशी ने प्रभु यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया। उसके पश्चात वे बांद्रा असेंबली (वर्तमान में, बेतेल असेंबली, सांताक्रूज) की संगति में सतत बने रहे। लगभग पंद्रह वर्षों तक श्रीमती थंकम्मा कोशी मुंबई में रहीं।

सभी जगह और सभी लोगों के साथ सुसमाचार बांटने की बड़ी धुन उनके जीवन में थी। मुंबई से केरल वापस आने के बाद उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक लोगों के साथ सुसमाचार बांटना आरंभ किया। हमें यह देखकर बड़ी खुशी होती है कि कीजाकनापडिकल परिवार (हमारे पड़ोसी) ने प्रभु यीशु में उद्धार को पा लिया है। इस परिवार के तीन बच्चों के लिए श्रीमती थंकम्मा कोशी माता समान थीं। इसके अलावा, परमेश्वर ने उन्हें भाई बाबू को चेत्तन्नूर बाइबल कॉलेज में जाकर शिक्षा पाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु इस्तेमाल किया। आज वो बाबू वर्गीस के रूप में जाने जाते हैं जो उत्तर केरल के पेरीथलमन्नू नामक स्थान पर प्रभु की दाख की बारी में सेवा कर रहे हैं।

अतिथि-सत्कार के लिए भी उनमें जोश भरा रहता था। वे कभी भी प्रभु के किसी दास को अपने घर से "खाली हाथ" नहीं भेजती थीं। प्रभु के बहुत से दासों के लिए उन्होंने अपने घर के दरवाजे को खोलकर उनका अतिथि-सत्कार किया जिनमें स्व. श्री एम. ई. चेरियन, स्व. श्री टी. के. शमूएल शामिल हैं; उत्तर भारत में सेवा करनेवाले प्रभु के अनेक दास उनके घर में ठहरना पसंद करते थे क्योंकि श्रीमती थंकम्मा कोशी उनसे हिन्दी और मराठी में बातें किया करती थीं। कल्लीसरी सेंटर में मसीही बहनों की सभा में हमेशा उपस्थित रहने में वे उत्साहित रहती थीं। वे अपने से छोटी बहुत सी बहनों को ऐसी सभाओं में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित किया करतीं थीं; वे एक प्रार्थना-योद्धा थीं।

95 वर्ष की आयु में भी, वे जवान-बच्चों से मिलकर यह पूछने के लिए लालायित रहा करतीं थीं कि उन्होंने उद्धार पाया है या नहीं। वे परमेश्वर से प्रेम करती थीं तथा परमेश्वर के लोगों को वे दिल से चाहती थीं। अब वे अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के प्रेम का अनुभव करते हुए स्वर्गीय आनंद में विश्राम कर रहीं हैं। इस पृथ्वी पर के अपने जीवनकाल के दौरान उन्हें इस बात का दृढ़ निश्चय था कि सिर्फ सुसमाचार ही वह एकमात्र संदेश है जो पापी को उद्धार दिलाता है। यह सुसमाचार यीशु मसीह ही है जो परमेश्वर का एकलौता पुत्र है और जिसने स्वर्ग को छोड़कर इस पृथ्वी पर मानव रूप धारण किया। प्रभु यीशु ने क्रूस पर चढ़कर हमारे पापों के न्यायदण्ड को स्वयं अपने ऊपर ले लिया और हमारे पापों की क्षमा के लिए उन्होंने अपना लहू बहा दिया। क्रूस पर प्रभु यीशु की मृत्यु उनका अंत नहीं था, जैसा कि उनके बैरी चाहते थे, परंतु तीसरे दिन मृतकों में से जी उठकर वे हर पापी के एकमात्र उद्धारकर्ता बन गए जो विश्वास के साथ उन्हें पुकारते हैं। जैसा कि पवित्रशास्त्र कहता है, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धामिर्कता बन जाएं" (2 कुरिन्थियों 5:21)।

श्रीमती थंकम्मा कोशी 4 बच्चों (भाई जॉन कोशी एवं स्व. बहन एलियम्मा जॉन, त्रिवेंद्रम; इवेंजलिस्ट डॉ. कोशी मैथ्यू एवं बहन फेलिसिटी मैथ्यू, मुंबई; भाई पॉल कोशी एवं स्व. बहन मर्सी पॉल, नवी मुंबई; बहन ग्रेस साजन एवं स्व. भाई साजन अब्राहम, कोट्टेयम) की माता, 7 बच्चों (जूड़ी & रॉय, जस्टीन & अनीता, अनूब & मेर्लिन, एब्बी & बेकी, फीबे & हेशली, ख्रीस्टीन & शेरन, एबेल पॉल) की दादी और नानी; तथा 8 बच्चों (लिया, डेनिएल, अबीगेल, नाओमी, माट्टी, एन मेरी, अनायाह और थिओ) की परदादी और परनानी थीं।

"... जो मुरदे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, आत्मा कहता है, हां क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे, और उन के कार्य उन के साथ हो लेते है" (प्रकाशितवाक्य 14:13)।

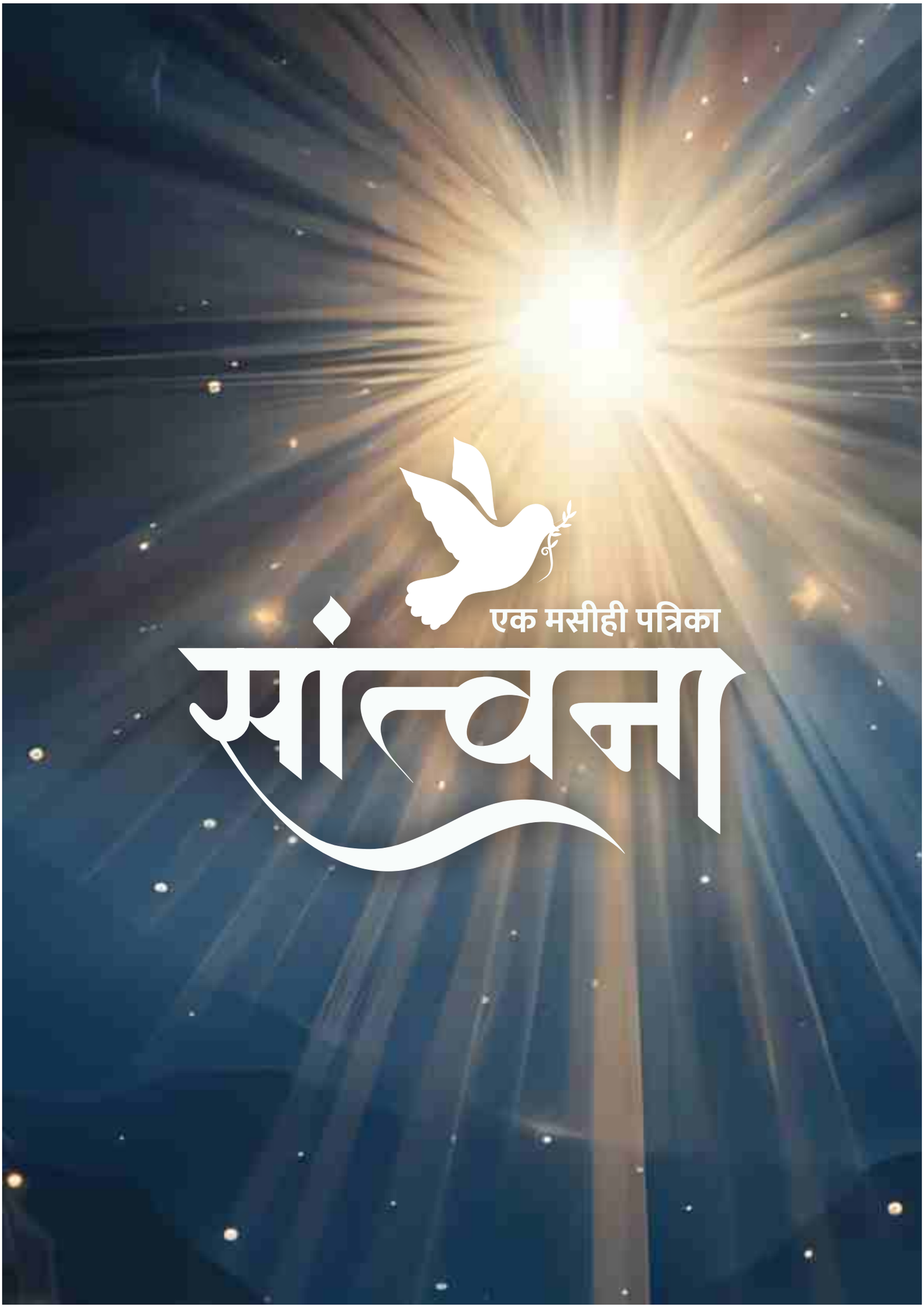
एक मसीही पत्रिका
सांत्वना